Dr. Anshu Pandey
Assistant Professor
History department

UNIT – 3

Feudal Economy and its Impact (सामंती अर्थव्यवस्था और उसका प्रभाव)

मध्यकालीन यूरोप की आर्थिक संरचना को सामंती अर्थव्यवस्था के रूप में जाना जाता है। यह व्यवस्था लगभग नौवीं शताब्दी से लेकर पंद्रहवीं शताब्दी तक यूरोप के अधिकांश भागों में प्रचलित रही। इस व्यवस्था का मूल आधार भूमि थी, क्योंकि उस समय कृषि ही उत्पादन का प्रमुख साधन थी। भूमि का स्वामित्व राजा और सामंतों के हाथों में केंद्रित था, जबकि कृषक वर्ग भूमि पर काम करने के लिए बाध्य था। सामंती अर्थव्यवस्था में राजा भूमि को अपने सामंतों में बाँट देता था और सामंत बदले में राजा को सैन्य सहायता और निष्ठा प्रदान करते थे। इस प्रकार पूरी व्यवस्था व्यक्तिगत संबंधों और परंपरागत अधिकारों पर आधारित थी।

सामंती अर्थव्यवस्था में किसान स्वतंत्र नहीं थे। वे भूमि से बँधे हुए होते थे और बिना सामंत की अनुमति के न तो भूमि छोड़ सकते थे और न ही अन्य कार्य कर सकते थे। किसान को अपने उत्पादन का एक बड़ा भाग सामंत को देना पड़ता था। इसके अतिरिक्त उसे बेगार करनी पड़ती थी और अनेक प्रकार के कर देने पड़ते थे। इस कारण कृषक वर्ग का जीवन अत्यंत कठिन और शोषणपूर्ण

था। सामाजिक दृष्टि से समाज कठोर वर्गों में विभाजित था और एक वर्ग से दूसरे वर्ग में जाना लगभग असंभव था।

आर्थिक दृष्टि से सामंती व्यवस्था अत्यंत पिछड़ी हुई थी। उत्पादन सीमित था और केवल स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति तक ही सीमित रहता था। व्यापार और उद्योग का विकास नहीं हो सका। मुद्रा का प्रयोग बहुत कम था और अधिकांश लेन-देन वस्तुओं के रूप में होता था। तकनीकी विकास की गति बहुत धीमी थी, जिससे उत्पादन क्षमता भी सीमित रही। इस व्यवस्था ने लंबे समय तक यूरोप की आर्थिक प्रगति को अवरुद्ध रखा।

हालाँकि समय के साथ-साथ सामंती व्यवस्था की कमजोरियाँ स्पष्ट होने लगीं। कृषि उत्पादन की सीमाएँ, किसानों का असंतोष और व्यापारिक गतिविधियों का बढ़ना इस व्यवस्था के पतन का कारण बना। आगे चलकर यही परिस्थितियाँ नई आर्थिक व्यवस्था के विकास की आधारशिला बनीं।